Click on the
Download Link
To view the complete book

भारतीय कला का परिचय

भाग 1

ललित कला की पाठ्यपुस्तक
कक्षा 11 के लिए

© NCERT not to be republished

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2022-23

11148 – भारतीय कला का परिचय भाग 1

कक्षा 11 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-073-0

प्रथम संस्करण

जून 2018 ज्येष्ठ 1940

पुनर्मुद्रण

मार्च 2021 फाल्गुन 1942

दिसंबर 2021 अग्रहायण 1943

PD 40T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2018

₹ 125.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा प्रतिभा प्रैस एवं मल्टीमिडिया प्राइवेट लिमिटेड, 6, अशोक नगर, लाटूश रोड, लखनऊ – 226 018 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 **फोन : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
होस्डेकेरे हेली एक्सटेंशन
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरू 560 085 **फोन : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **फोन : 079-27541446**

सी.डब्यू.सी. कैंपस
निकट धनकल बस स्टॉप, पनिहटी
कोलकाता 700 114 **फोन : 033-25530454**

सी.डब्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 **फोन : 0361-2674869**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*विपिन दिवान*
संपादन सहायक	:	*ऋषिपाल सिंह*
उत्पादन सहायक	:	*ओम प्रकाश*

आवरण
सुरेन्द्र कुमार

ले-आउट
सीमा श्रीवास्तव

© NCERT not to be republished

-------- Click on the --------
Download Link
To view the complete book

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् लगभग पाँच दशकों से लगातार विद्यालयी शिक्षा पद्धति में सुधार लाने के लिए कार्यरत है। विगत वर्षों में खासतौर पर *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा* (एन.सी.एफ.) - 2005 के पश्चात् पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण, उनकी प्रस्तुति एवं अंतरविषयी दृष्टिकोण में, अभ्यास के प्रश्नों इत्यादि में विशेष बदलाव देखने को मिलता है। इन प्रयासों ने पाठ्य-पुस्तकों को विद्यार्थियों के लिए सहज बनाया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, जो छात्रों के लिए विद्यालयी स्तर का अंतिम चरण है, उन्हें विषयों के अधिक विकल्प मिलने चाहिए जिससे वह आगे उच्च शिक्षा अथवा व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ सकें। इस दृष्टिकोण से परिषद् द्वारा सर्वप्रथम कला के अनेक विषयों में पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है।

शिक्षा के इस चरण में, ललित कला के पाठ्यक्रम को एक व्यावसायिक दृष्टिकोण से आकलित किया गया है जिससे वह उच्च माध्यमिक स्तर तक दिया जाने वाला सामान्य ज्ञान का विषय न होकर एक अध्ययन के विषय के रूप में देखा गया है। इन कक्षाओं में ललित कला के अधिगम के उद्देश्य भी मुक्त अभिव्यक्ति का माध्यम न होकर विद्यार्थियों के कौशल विकास और उनके द्वारा अपनी शैली और विशिष्ट माध्यम से काम करना है। इस स्तर पर दृश्य कला के विद्यार्थियों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे भारत एवं विश्व के कला इतिहास की समझ भी बनाएँ। कला इतिहास, कला के अध्ययन का ही एक भाग है और स्वयं में एक अलग विषय भी जिससे विद्यार्थी अपनी विरासत के बारे में जान पाते हैं। ज्ञात है कि देश की विभिन्न शिक्षा परिषदें दृश्य अथवा ललित कला विषयों को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पढ़ाती हैं जिसमें चित्रकला, मूर्तिकला, व्यावहारिक कला अथवा व्यावसायिक कला जैसे विषय शामिल हैं। इन सभी पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के पश्चात् राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने इस पाठ्यक्रम में प्रयोग के अतिरिक्त सिद्धान्त का हिस्सा भी शामिल है जिससे देश की कला, ऐतिहासिक विरासत और स्थापत्य के विषय में विद्यार्थी जानकारी प्राप्त करते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए कक्षा 11 के लिए *'भारतीय कला का परिचय, भाग–1'* नामक पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है।

कक्षा 11 की इस पाठ्यपुस्तक में प्रागैतिहासिक काल के गुहा भित्तिचित्रों की परंपरा और उसका बौद्ध काल में और उसके बाद देश के विभिन्न भागों में बौद्ध, जैन एवं हिन्दू मूर्तिकला और स्थापत्य कला में विस्तार देखने को मिलता है। इंडो-इस्लामिक काल में कला के निर्माण के एक नए युग का आरंभ हुआ। इसके अंतर्गत अनेक विशाल किलों, मस्जिदों, मकबरों और महलों का निर्माण हुआ जिनकी विभिन्न शैलियों के विषय में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई है। इस तरह विद्यार्थियों का परिचय भारतीय संस्कृति से कराया गया है।

© NCERT not to be republished

रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक समितियों द्वारा किए गए कठिन परिश्रम की प्रशंसा करती है। हम इस पाठ्यपुस्तक की निर्माण समिति के मुख्य सलाहकार रतन परिमू, *अध्यक्ष* (सेवानिवृत्त), ललित कला संकाय, एम.एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा के प्रति इस कार्य के मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त करते हैं। समिति में सम्मिलित सभी इतिहासकारों के लिए विद्यालय स्तर के छात्रों के लिए पाठ्यपुस्तक का निर्माण एक चुनौती थी जिसमें वे सफल हुए और उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है। हम उन संस्थानों और संगठनों के आभारी हैं, जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्रियों और कार्मिकों को हमारे साथ साझा करने की अनुमति दी। हम मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा नियुक्त राष्ट्रीय निगरानी समिति के सदस्यों के प्रति विशेष रूप से आभारी हैं, जिसमें अध्यक्ष के तौर पर प्रोफेसर मृणाल मीरी और प्रोफेसर जी.पी. देशपांडे ने अपना मूल्यवान समय और योगदान दिया। अपने उत्पादों की गुणवत्ता और व्यवस्थित सुधार और निरंतर उन्नति के लिए वचनबद्ध संगठन के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. टिप्पणियों और सुझाव का स्वागत करती है जो भविष्य में इसके संशोधन और परिष्कृतिकरण में हमारी सहायता करेंगे।

नयी दिल्ली
मई 2018

हृषिकेश सेनापति
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT not to be republished

प्रस्तावना

ब्रिटिश शासन काल में, कुछ ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारियों ने कुछ भारतीय विद्वानों के साथ मिलकर भारत के अतीत का अध्ययन करने में अपनी सक्रिय रुचि दिखाई। उनके ऐसे प्रयासों के फलस्वरूप भारत में कला सम्बंधी स्मारकों के अध्ययन का कार्य सुव्यवस्थित रूप से शुरू हुआ। सर्वप्रथम ऐसे स्मारकों की सूची बनाकर उनका संक्षिप्त प्रलेख तैयार किया गया जो भारत के अतीत के अवशेषों के सुस्पष्ट साक्ष्य थे। तत्पश्चात् पुरातत्वीय खोजों और खुदाइयों का काम शुरू किया गया, जिसके फलस्वरूप अनेक कला सम्बंधी ऐतिहासिक स्थलों का पता चला। शिलालेखों तथा उत्कीर्ण लेखों को पढ़ा और समझा गया। प्राचीन सिक्कों/मुद्राओं आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की गई। ऐसी जानकारियों के आधार पर हमें अतीत की कलात्मक परंपराओं को जानने-समझने में सहायता मिली। धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन के साथ-साथ धर्म के इतिहास का भी अध्ययन किया गया और पुरानी प्रतिमाओं/मूर्तियों एवं चित्रों को पहचानने का कार्य प्रारंभ हुआ जो आरंभिक ज्ञान एवं विद्वता को जानने-समझने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन बन गया। वैसे तो कला के इतिहास का अध्ययन पुरातत्वीय अध्ययनों के क्षेत्र में ही विकसित हुआ था किन्तु अब इसे एक विशिष्ट शास्त्र यानी एक अलग विषय के रूप में मान्यता दी गई है। पाश्चात्य देशों में, प्रमुख रूप से यूरोप में इस विषय ने अनेक प्रणाली तंत्रीय साधनों की सहायता से पर्याप्त उन्नति की है किन्तु भारत में अभी तक यह अनुसंधनात्मक प्रणालियों में विकास की प्रक्रिया तक ही सीमित है।

चूंकि कला के इतिहास का अध्ययन व्यापक प्रलेखन तथा उत्खनन कार्यों के आधार पर विकसित हुआ है इसलिए कलात्मक वस्तुओं का वर्णन इस विषय के अध्ययन का प्रमुख आधार बन गया है। बीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में ऐसे बहुत ही कम उल्लेखनीय अध्ययन किए गए, जहां चिंतन का विषय साधारण वर्णन से आगे बढ़ा हो और अध्ययनकर्ताओं ने वर्णन के अलावा कुछ और भी विवेचन किया हो। अनेक स्मारकों, मूर्तियों और शैलियों का नामकरण तत्कालीन राजवंशों के आधार पर किया गया, जैसे—मौर्य कला या मौर्य कालीन कला, सातवाहन कला, गुप्त कालीन कला आदि। इसके अलावा, कुछ कलाकृतियों के काल का नामकरण धार्मिक आधार पर भी किया गया, जैसे—बौद्ध काल, हिंदू काल और इस्लामिक या मुस्लिम काल। लेकिन इस तरह निर्धारित किए गए नाम, कला की परंपराओं को समझने के लिए उपयोगी नहीं हैं। मध्य युगीन कला और वास्तु संबंधी स्मारकों को अनेकों रूपों में राजवंशों का संरक्षण मिला, लेकिन इससे पहले के ऐतिहासिक काल को भी राजवंशों के नामों से जोड़ दिया गया और वे आज भी प्रचलित हैं।

© NCERT not to be republished